IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के धार्मिक व सांस्कृतिक विचार

Dr.Anju bala

Assistant professor

Bits law college, bhiwani

सार

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का ये मानना था कि भारत और अन्य राष्ट्रों के इतिहास के विषय में विचार करने पर यह पता चलता है कि केवल भौगोलिक एकता ही राष्ट्रीयता के लिए काफी नहीं है। किसी भी राष्ट्र के नागरिक जन एक राष्ट्र तभी बन सकते है जब वो एक समान संस्कृति द्वारा एक रुप हो जाएं। जब तक अनेकों राजनीतिक विभाजन होते हुए भी यहाँ के लोगों की मूलभूत एक ही राष्ट्रीयता बनी रही। परन्तु जब से ब्रिटिश शासको ने अपने व्यक्तिगत फायदे के लिए इसकी एकता को भंग करके विदेशी संस्कृतियों को इस देश पर थोपा है तभी से भारतीय राष्ट्रीयता संकट में पड़ गई है। डॉ. मुखर्जी ने कहा था कि वास्तविक राष्ट्रीय प्रगति धार्मिक शिक्षाओं का उल्लंघन करके नहीं बल्कि धार्मिक शिक्षाओं को अधिक दृढ़ता से अपनाने से प्राप्त की जा सकती है। उनका मानना था कि जिस देश की संस्कृति जितनी सुदृढ होगी, वह राष्ट्र अपने पूर्ण रुप में उतना ही शक्तिशाली होगा। भारत के सांस्कृतिक दूत के कार्यो के लिए डॉ. मुखर्जी एक बहुत ही उपयुक्त व्यक्तित्व थे।

की–वर्ड –डॉ. मुखर्जी, राष्ट्र, संस्कृति, एकता

भूमिका

भारतीय संस्कृति के राजदूत डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने बौद्ध धर्म के साथ भारतीय सभ्यता के समन्वय को विकसित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बौद्ध धर्म वाले देश जैस बर्मा, कम्बोडिया, तिब्बत एवं सिलोन है। इन देशों द्वारा 1952 में अनुनय करने पर कि उनको भगवान बुद्ध के दो शिष्यों सारिपुत और मोदग्लायन के कुछ पवित्र अवशेष पूजा के लिए भेजने

का कष्ट किया जाए, तब इन देशों की यात्रा करने का डॉ. मुखर्जी ने निर्णय किया। वे इन पवित्र अवशेषों को लेकर बर्मा और कम्बोडिया गए। वहां के लोगों ने बड़ी भारी मात्रा में इक्ट्टठे होकर इन पवित्र अवशेषों को श्रृद्धांजलि दी व बुद्ध द्वारा दिए गए सन्देशों एवं भारत व दक्षिणी पूर्वी एशिया के देश एकजुट होकर एक नए एशिया के युग का आरम्भ कर सकते है, के ऊपर आधारित डॉ. मुखर्जी के भाषणों को सुनने के लिए इकट्ठे हुए। भारत की ओर से बर्मा के नागरिकों को भेंट के रुप में डॉ. मुखर्जी ने इन अवशेषों का कुछ हिस्सा दिया। बर्मा के प्रधानमंत्री थाकिन तुन ने इस अप्रतिम भेंट के लिए डॉ. मुखर्जी को अपना आभार प्रकट करते हुए यह कहा कि हमारे दो भगिनी देशों के बीच में पहले से स्थापित अच्छे संबंध आगे और भी दृढ होंगे और बोद्ध धर्म के प्रचार व प्रसार मे हम दोनो एक समान उद्देश्य में मदद करेंगे। मुझे यह विश्वास है कि आपके और महाबोधि सोसायटी ऑफ इण्डिया के प्रशंसनीय व महान कामो के लिए सम्पूर्ण बोद्ध जगत मेरे साथ मिलकर साधु! साधु! साधु कहेगा।

संस्कृति के महत्व पर अपने विचार प्रकट करते हुए डॉ. मुखर्जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि – ''यदि भारत की स्वतंत्रता को सारपूर्ण बनाना है तो इसे भारत की संस्कृति के मूल्यों और आधारभूत तत्वों को ठीक प्रकार से समझने और इसके प्रचार एवं प्रसार में मददगार बनना पड़ेगा। जो भी राष्ट्र अपनी पुरातन उपलब्धियों से गौरव महसूस नहीं करता या प्रेरणा नहीं लेता वह कभी भी न तो अपने वर्तमान को निर्मित कर सकता है और ना ही कभी भी अपने भविष्य की रूपरेखा तैयार कर सकता है। कोई भी कमजोर राष्ट्र कभी भी महानता की ओर अग्रसर नहीं हो सकता।''

डॉ. मुखर्जी का कहना था कि वास्तविक राष्ट्रीय प्रगति धार्मिक शिक्षाओं का उल्लंघन करके नहीं बल्कि धार्मिक शिक्षाओं का और भी दृढ़ता के साथ अपनाकर प्राप्त की जा सकती है। वे हिन्दुत्व की सांस्कृतिक प्रमुखता को साकार करने में राष्ट्रवाद को एक साधन के रुप में मानते थे। उनका ये मानना था कि जिस भी राष्ट्र की संस्कृति जितनी सुदृढ़ होगीं, वह राष्ट्र अपने पूर्ण रुप में उतना ही अधिक शक्तिशाली होगा। उनके अनुसार सभ्यता संस्कृति की छात्रा मात्र होती है। संस्कृति का अभिप्राय वह आचरण है जो किसी भी भू–क्षेत्र में रहने वाली मानव जाति के संस्कारों की वजह से बनता है। आचरण बनाने में इतिहास, साहित्य, महापुरुषों का जीवन एवं ऐतिहासिक या धार्मिक रीति–रिवाजों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन सभी

बातों की जड़े भारत में मुख्यतः भारत की आर्यभूमि में रहने वाले हिन्दुओं के साथ संबंधित है। इसलिए भारतीय संस्कृति एक सनातन संस्कृति या हिन्दू संस्कृति है और यह आदि समय से आज तक एक लय में चली आयी है। डॉ. मुखर्जी ने भारतीय संस्कृति के निम्नलिखित आधार बताए है। पुर्नजन्म का आधार, कर्म–मीमांसा, समान अधिकार, विद्धानों के लिए मान व श्रद्धा का भाव, व्यक्ति एवं समाज के अधिकारों के बीच संतुलन, समान अवसर, जीवन और स्वतंत्रता की मर्यादा एवं चरित्र।

वस्त्र, खान–पान, वेशभूषा ये सभी सभ्यता के भाग है और उक्त आधार की प्रेरणा से ही बनते है। उनका विचार था कि सभ्यता युगों के अनुसार परिवर्तित होती रहती है, किन्तु संस्कृति चिरयुगीन है। इसलिए डॉ. मुखर्जी ने हिन्दू कोड–बिल का विरोध करके राज्य के हस्तेक्षप को सामाजिक क्षेत्र से बिल्कुल अनुचित बताया था। वो ये मानते थे कि यदि समाज अपनी बुराइयों को खुद को दूर करने में सक्षम नहीं है तो कानूनों को जबरदस्ती उन पर डालकर उन्हें सुधारना बहुत ही कठिन है और यदि ऐसा होता है तो भी जाति या धर्म के नाम पर भेदभाव न करके पूरे देश में एक समान नागरिक संहिता का पालन करवाना राज्य का ही कर्तव्य बन जाता है।

सभी भारतीयों के दिलों में भारत की एकता के लिए देश के प्रति एक सच्ची श्रृद्धा और भारतीय संस्कृति के प्रति एक आदर का भाव होना जरूरी मानते थे। डॉ. मुखर्जी की भारतीय संस्कृति के बारे में मान्यताएँ वीर सावरकर के उन विचारों से मिलती है जिसमें उन्होंने किसी भी राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता के लिए उसकी मातृभूमि एवं पुण्यभूमि का एक ही जाना महत्वपूर्ण बताया है। सावरकर के अनुसार, हिन्दूत्व के वास्तविक लक्षण ही भारत की राष्ट्रीय भावना के मुख्य आधारभूत तत्व है। राष्ट्रीयता के संबंध में दो बातें – एक तो पूर्ण रुप से विकसित और भाषा संस्कृत व दूसरी अपनी पवित्र जन्मभूमि ये दो बातें हमें अमेरिका, चीन और रुस जैसे राष्ट्रो से भी ज्यादा सौभाग्यशाली बनाती है।

भारत भूमि की इन उक्त अनुपम विशेषताओं को डॉ. मुखर्जी पूरी दुनिया के लिए प्रेरणादायक समझते थे इसलिए ही उनका ये मत था कि विश्व के आध्यात्मिक और भौतिक पहलुओं में एक सामंजस्य बिठाने के लिए विश्व में अपना सांस्कृतिक संदेश देना ही भारत का ऐतिहासिक मिशन है, उनका मानना था कि सांस्कृति शब्द से जीवन की धर्म के रुप में व्याख्या होती है। इसे डॉ. मुखर्जी चिन्तन व क्रिया के क्षेत्र में लोगों की एक ऐसी उच्च स्थिति

मानते थे जो उनसे मानस पटल को परिमार्जित करके सामूहिक व व्यक्तिगत रुप से उनसे आचरण का संचालिका है।

भारत के सांस्कृतिक दूत के कार्यों के लिए डॉ. मुखर्जी एक बहुत ही उपयुक्त व्यक्तित्व थे, परन्तु उनकी असामयिक मृत्यु ने उनकी सारी योजनाओं को समाप्त कर दिया। उनको 1952 में महाबोद्धि सोसायटी के अध्यक्ष के रुप में दक्षिणी–पूर्वी एशिया के बौद्ध धर्म वाले देशों में जाकर भारत के सांस्कृतिक दूत बनकर काम करने का मौका मिला। उनकी आस्था बोद्ध धर्म व महाबोद्धि सोसायटी में इसलिए हो गई थी क्योंकि उनका मानना था कि संसार के बौद्ध धर्म को मानने वाले देशों को भारत के साथ संगठित करने के लिए बौद्ध धर्म को मानने वाले देशों को भारत के साथ संगठित करने के लिए बौद्ध धर्म को मानने वाले देशों को भारत के साथ संगठित करने के लिए बौद्ध धर्म की विचारधारा व संस्कृति, जिसका स्त्रोंत एवं प्रेरक शक्ति हिन्दू धर्म है, सफल हो सकती है उनका यह विश्वास था कि विचारों व संस्कृति की समानता भारत और इन बौद्ध धर्म देशों के बीच राजनीतिक और आर्थिक मतभेदों के बावजूद स्थायी रुप से एक्य को उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध हो सकेगी।

दक्षिणी पूर्वी एशिया के सांस्कृतिक राजदूत ने नवम्बर 1952 में अपने आखरी कार्य के समय डॉ. मुखर्जी सांची के नए बौद्ध विहार के उद्घाटन समारोह एवं पुनीत भस्मावेश की स्थापना में उपस्थित थे। विश्व के सभी बौद्ध धर्म को मानने वाले, चीनी धार्मिक नेता व राजनीतिक इस अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक समारोह में उपस्थित थे। डॉ. मुखर्जी ने उपराष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में हुए इस समारोह के संबोधन में कहा कि 'स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् दक्षिणी–पूर्वी एशिया के अनेक देश बौद्ध संस्कृति व धार्मिक देर्शनों को पाने के लिए प्रयास करते रहे है। इस दिशा में भारत उनकी आध्यात्मिक जननी है।'

भारतीयता से संबंधित डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की मान्यताओं की स्पष्ट व्याख्या करते हुए कहा जा सकता है कि भारतवर्ष ने यूरोप एवं एशिया के देशों को अपनी धर्म साधना की सबसे उत्तम चीजें दान की है। मित्रता एवं अहिंसा का संदेश दिया है, दुनिया के स्वार्थों की परवाह न करते हुए एक विशाल आध्यात्मिक अनुभूति का उपदेश दिया है और उसने भी जिन बातों को लिया है वे भी उसी प्रकार से महान एवं दीर्घ स्थायी है।

इसलिए ही उनका ये मानना था कि भारत की संस्कृति में एक असीम शक्ति एवं आध्यात्मिक अनुभूति है जिसके द्वारा पूरी दुनिया का मार्गदर्शन दिया जा सकता है। लेकिन पहले यह जरूरत है कि हम भारत की सुप्त संतति को जगाकर इसके आत्म विस्मरण को दूर कर दें। भारतवर्ष जब आत्मिक और सांस्कृतिक रुप में जाग जाऐगा तो राजनीतिक प्रगति के साथ–साथ व लौकिक उत्कर्ष के लिए नये–नये आयाम व कीर्तिमान स्वयं ही स्थापित कर लेगा।

संदर्भ

1. पद्मिनी, हरिश्चन्द्र : डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी समकालीन दृष्टि में, नोएडा न्यूज प्रा. लि. दिल्ली, 1997, पृष्ठ संख्या 237

2. गोयल, शिवकुमार : डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी : जीवन यात्रा, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ संख्या 86

3. वर्मा विश्वनाथ : आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा 2005–06, पृष्ठ संख्या 417

4. गुरुदत्त : डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी की अन्तिम यात्रा – एक ऐतिहासिक दस्तावेज, हिन्दी साहित्य सदन, नई दिल्ली, 2003 पृष्ठ संख्या 46

5. सावरकर विनायक दामोदर – हिन्दुत्व, हिन्दी साहित्य सदन, नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ संख्या 132

6. मधोक, बलराज : डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी – एक हुतात्मा का शब्द चित्र, सूर्य भारती प्रकाशन, दिल्ली, 1996

7. द्विवेदी, हजारी प्रसाद : भारतीय संस्कृति की देन, अशोक के फूल, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2013, पृष्ठ संख्या 76